पैर तले की ज़मीन

मोहन राकेश

दो शब्द

'पैर तले की ज़मीन' को अपनी आँखें मूंद जाने से बरसों पहले राकेश जी ने लिखा था (उसके पहले अंक के तो एकाधिक मसविदे तैयार हुए थे) और जिस दिन वे मुझे एकाएक धोखा देकर सदा के लिए चले गये, तब भी टाइपराइटर पर इसी नाटक का एक पृष्ठ—आधा टाइप हुआ, आधा खाली—लगा रह गया था और कई पृष्ठ, दो-तीन पंक्तियाँ टाइप और फिर रद्द किये हुए, वेस्ट-पेपर बास्कट में पड़े मिले। 'आधे-अधूरे' की मंचीय और साहित्यिक सफलता के बाद उनके नाटककार की कोई महत्त्वाकांक्षा इसी नाटक में केन्द्रित और निहित हो रही थी—उनके नाटकों के पाठकों और दर्शकों की आशाएं भी।

यह नियति की विडम्बना है कि समूचे नाटक की संयोजना को पक्का लेने के बाद राकेश जी 'पैर तले की ज़मीन' को अधूरा छोड़ गये—दोषा, मांजा अंतिम मसविदा केवल पहले अंक का ही कर पाये। दूसरे अंक की परिकल्पना, उसके दृश्यबन्ध के ..., इस अंक के आधे संवाद, उनकी नोट-बुक्स में ही मिले।

... राकेश जी ने नाटक की पांडुलिपि प्रकाशकों को सौंपने की

... की जो शर्त यदि उसमें और हममें एक

न करता तो एक-दो महीनों में अधिक

... वह और ... के रिहर्सल ही

... रूप में खेल

पात्र

मधुलिका : बार का काउंटर क्लर्क
शिवराम : बार का बावरची
परिमल : कुमारी, क्लब की सदस्य
मुनमुनबाला : कुमारी, क्लब की सदस्य
मीरा : टेबल टेनिस की अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी
रीता : मीरा की सखी
अनूप : एक युवक
सलमा : अनूप की पत्नी

अनुवर्तन एक

परदा उठने पर भटकती रोशनी मे बार, लाउंज और लान तीनो खाली नज़र आते हैं । जहा-तहां पडी जूठी प्लेटों, खाली और भरे हुए गिलासो तथा बिखरे हुए ताश के पत्तो से लगता है कि लोग अभी-अभी अफरा-तफरी मे वहा से उठकर गए है । उस बिखराव और खालीपन को रेखांकित करता संगीत, जिसके मद्धिम पड़ने तक टेलीफोन की घण्टी बजने लगती है । तीन-चार बार घण्टी बज चुकने के बाद अब्दुल्ला हडबडी में स्टोर से निकलकर आता है । अपनी घबराहट मे टेलीफोन तक पहुचने मे वह एकाध जगह हल्की ठोकर खा जाता है । उसके रिसीवर उठाने पर टेलीफोन भी गिरने को हो जाता है, पर वह किसी तरह उसे सभाल लेता है ।

: टूरिस्ट क्लब आफ इण्डिया ।···कौन शफी साहब ? सलाम साहब ।·· जी हा, भेज दिया है अधूब साहब को ।···नही, अब कोई नही रहा यहां । पुल मे दरार पडने की खबर पाते ही सब लोग क्लब खाली कर गए हैं ।···हम भी बस चला ही चाहते हैं । स्टोर का सामान मैंने चेक कर लिया है, सिर्फ हिसाब की कापी चेक करनी रहती है । नियामत जब तक दरवाजे बन्द करता है, तब तक मैं···क्या ? दरार डेढ़

बिक्री साढ़े सात पेग। और बाकी··· (एक बोतल उठाकर) होनी चाहिए छह पेग और हैं नहीं यह चार पेग भी।

(घबराहट में कभी आगे और कभी पीछे की तरफ पन्ने पलटता है।)

जैसे खुद बोतलें ही पी जाती हैं अपने अन्दर से। या कोई चुपके से इनके लेवल बदल देता है! (फिर एक बोतल उठाकर) सोलन का हिसाब···

(फिर जैसे आवाज़ सुनकर ठिठकता है और केबिन की तरफ देखता है। केबिन के साथ की खिड़की का दरवाज़ा हवा से चरमराता है, फिर एकाएक बन्द हो जाता है। बोतल उसके हाथ से गिरते-गिरते बचती है। वह उसे काउंटर पर रखकर फिर कापी में व्यस्त हो जाता है।)

सोलन का हिसाब ब्लैक एण्ड ह्वाइट से मेल खाता है और ब्लैक एण्ड ह्वाइट का हिसाब···वह तो मेल खाता ही नहीं। खुदा की भी जैसे अब्दुल्ला से ही दुश्मनी है। जो भी गड़बड़ करनी होती है, मेरी ही कापी में करता है। (पल-भर सोचता रहकर) मेरा क्या है···मैं यहां हिंदसे बदल देता हूं। हिंदसे बदलना कोई बेईमानी नहीं। बेईमानी तो जो मैंने खुद पी हो और हिसाब न रखा हो। (बदले हिंदसों को गौर से देखता हुआ) मालिक बस कापी देखता है। यह नहीं कि दूसरा कितनी जानमारी से काम करता है।···और सब लोग तो जान बचाकर पुल के उस तरफ जा पहुंचे हैं और मियां अब्दुल्ला अब तक यहां बोतलों में शराब नाप रहा है। कापी में हिंदसे ठीक कर रहा है! अगर कहीं···

[illegible] है और [illegible] रहा है [illegible] की तरफ देखता [illegible] आ जाता है। उसी तरह [illegible] आवाज का [illegible] रहता है फिर जैसे यह निश्चय करके कि यह सिर्फ उसका वहम है, जल्दी जल्दी काउण्टर की दराज खोल-खोल बन्द करने लगता है।

(दराजों में ढूंढता हुआ) अब यह हिसाब की कापी कहां गई? (एक दराज से कापी निकालकर) रखो कहीं, मिलती कहां से है।

जल्दी-जल्दी कापी के पन्ने पलटता हुआ उसमें

सी···

मैं तुझसे पूछ रहा हूं कि···(बात याद न आने से) वह क्या था जो मैं तुझसे पूछ रहा था अभी ?

अभी तू सिर्फ चिल्ला रहा था। पूछना अभी बाकी था। (याद करने की कोशिश में) मैं वहां से यहा आया था ···क्यों आया था ? तुझे मैंने आवाज़ दी थी···किसलिए दी थी ?

: (चलने को होकर) मैं दरवाज़े बन्द कर रहा हू। तू सोच ले तब तक, किसलिए दी थी।

: रुक-रुक-रुक-रुक-रुक। (दिमाग पर ज़ोर डालता हुआ) वहां से यहा आया, यहा आकर आवाज़ दी···आवाज़ इसलिए दी कि कि कि कि··· तू हमेशा यही करता है। कोई न कोई उल्टी बात छेड़कर मुझे असली बात भुला देता है।

: असली बात तेरे लिए होती ही वह है जो तुझे भूल जाती है। जो याद रह जाए, वह सिर्फ बात होती है, असली बात नहीं।

चल देता है

: (उतावली में) ए ए ए···अब चल कहा दिया तू ?

नियामत रुककर गहरी नज़र से उसे देखता है।

अच्छा हां···दरवाज़े बन्द करते···पर देख···(रुक निगल ·कर) मैं कह रहा था कि···कि हम लोग साथ ही चलें बाहर। कहीं ऐसा न हो कि···कि तुझे याद न रहे और··· मेरा मतलब है कि तू···तू दरवाज़े बन्द करके उधर से ही चला जाय और···और···

: और तू अन्दर बन्द होकर शराब की बोतलें सूंघता रह जाय। च्-च्-च्-च्-च्-च्-च् !

मत : शफी साहब नाराज हो रहे हैं।···यहां तो कम्बख्त को
ढोकर ले जाने में कन्धे टूटने को आ
साहब हैं कि नाराज ही हुए जा रहे हैं।

ल्ला : (असमंजस में केबिन की तरफ देखता हु
मतलब है कि तू···मियां अयूब को सचमुच
आया है···

मत : नाम मत ले उस आदमी का। पी-पीकर इम
हो रहे थे जनाब कि ठीक दरार पार करते
लुढ़क गये।

ल्ला : लुढ़क गये?

मत : और क्या? दरिया की तरफ लुढ़क गये।

ल्ला : (आतंकित) यानी कि···लुढ़क ही गये?

मत : मैं वक्त से संभाल नहीं लेता, तो अब तक सात टुकड़ों में
बटकर पानी में सात मील निकल गये होते।

ल्ला . (आश्वस्त) कह रहा है लुढ़क गये। जब संभाल लिया,
तो लुढ़क कैसे गये? लुढ़क जाने का मतलब तो होता है
कि···

केबिन में जोर की ठक्-ठक्। साथ गिलास
टूटने की आवाज।

···तू मियां अयूब को अगर छोड़ आया है बाहर, तो यहां
केबिन में यह कौन आदमी है?

मत : केबिन में एक नहीं, दो आदमी हैं।

ल्ला : दो आदमी?

मत : पण्डित और झुनझुनवाला।

ल्ला : (पस्त) ये दोनों यहीं हैं अब तक?

मत : ताश खेल रहे हैं।

फिर चलने लगता है।

[illegible]

पण्डित — [illegible] ।

निज़ामन — [illegible]

अब्दुल्ला — वाह खूबसूरत [illegible] । [illegible] है कि

निज़ामन — कि पैदायशी बुज़दिल इतना बड़ा [illegible] भी [illegible] बना रहे [illegible] ना निवा खुराफ़ात के — [illegible] क्या कहा जा सकता है ? — बस यही एक मसला है । [illegible] ।

बाहर कॉलेज का परदा हटाया जाता है । [illegible] और झुनझुनवाला रमी के पत्ते? हाथ में लिए आमने-सामने की कुर्सियों पर बैठे हैं । पण्डित की शेरवानी और कमीज़ के बटन खुले हैं जिनसे उसकी बनियान और काले डोर का ताबीज़ बाहर नज़र आ रहे हैं । चेहरे से हारने वाले आदमी की परेशानी [illegible] झुनझुनवाला [illegible] पत्तों के

अंदाज से, जो मुसकराने से लेकर जुआ खेलने
तक हर काम नाप-तोल के साथ करता है,
कुरसी की पीठ से टेक लगाये पण्डित के पत्ता
चलने की राह देख रहा है। आंखों में जीतने
वाले आदमी का आत्मविश्वास है।

पत्तों की जोड़-तोड़ (करता हुआ, बिना नियामत की
तरफ देखे) सुन गया अब तुम्हें? ···एक ब्लैक एण्ड
ह्वाइट। बड़ा।

एक पत्ता चलता है, जिसे उठाकर झुनझुनवाला
अपने पत्ते खोल देता है।

हक्लेयर।

(कुछ खीज के साथ अपने नंबर गिनता हुआ) दस सात
सत्रह दस सत्ताईस···सत्ताईस और पन्द्रह बयालीस।

(पत्ते खोलता हुआ, नियामत की तरफ देखकर) नहीं सुना
अब भी?

माफ कीजिए, साहब। बार बन्द हो गया है।

बन्द हो गया है?···क्यों?

क्योंकि···

मुझे एक ही और चाहिए। आखिरी।

अब्दुल्ला भी अब काउंटर से हटकर वहां आ
जाता है।

आखिरी पेग अब पुल के उस तरफ चलकर मिलेगा,
साहब!

क्यों?···उस तरफ चलकर क्यों मिलेगा?

क्योंकि पुल टूट गया है, बार बन्द हो गया है।

: क्या कहा?···पुल टूट गया है?

: (कागज पर हिसाब जोड़ता हुआ) बयालीस और एक सौ

नियामत : यह भी तब की बात है जब मैं अयूब साहब को छोड़कर उधर से आया था। (पण्डित से) इसलिए सारा क्लब खाली करा लिया गया है। इस वक्त सिर्फ हमी चार आदमी हैं यहां।

> तभी मंच के बाहर बायीं तरफ से टेबल-टेनिस खेलने की आवाज सुनाई देने लगती है।

अब्दुल्ला . (स्तब्ध) और ये कौन लोग हैं उधर···टेबल-टेनिस रूम में ?

नियामत : कौन लोग हो सकते हैं ? मैंने अभी थोड़ी देर पहले एक-एक कमरा देख लिया था।

अब्दुल्ला : देख लिया था, तो ये खेल कौन रहे हैं उधर ? हम लोगों के सिवे ?

> नियामत गहरी नजर से अब्दुल्ला को देखकर उधर को चल देता है। पण्डित अपनी शेरवानी के बटन बन्द करने लगता है। झुनझुनवाला मेज से कागज़-ताश समेटता है। अब्दुल्ला काउंटर पर आकर अलमारी में ताला लगाने की कोशिश करता है पर बदहवासी में वह उससे लग नहीं पाता।

पण्डित : (उठता हुआ) अगर चलते-चलते एक मिल जाता न आखिरी···

> टेबल-टेनिस की आवाज रुक जाती है। नियामत बाहर निकलने लगता है कि उधर से तेज़ी से आती नीरा उससे टकरा जाती है। उसका रैकेट हाथ से छूटकर परे जा गिरता है।

नीरा : दिखता नहीं कोई सामने से आ रहा है ?

नमूनेवाला : एक कतरन पर रकम लिखकर पंडित की तरफ बढ़ाते हुए [illegible] दो सौ सत्तावन रुपए बीस पैसे।

पंडित : [illegible]

[illegible] कर [illegible] बैंक [illegible] है। नमूनेवाला [illegible] देता है। नीरा [illegible] [illegible]

नीरा : [illegible] [illegible]।

अब्दुल्ला : तू इस वक्त [illegible] कर रही है?

नीरा : [illegible] [illegible] क्या कर रही है?

अब्दुल्ला : [illegible] कौन था [illegible] ?

नीरा : [illegible]

अब्दुल्ला : ([illegible] चबाकर [illegible]) निज़ामन का [illegible] का [illegible] तू [illegible] चला आ रहा है अब [illegible] इनकी गुड्डा दीदी का। गीता गुड्डा दीदी।

नीरा : गुड्डा दीदा बड़ा रहा है अब।

अब्दुल्ला : बड़ा [illegible] है अब [illegible] वह

नीरा : उधर [illegible] है स्वीमिंग पूल पर।

निज़ामन : (पास आकर) स्विमिंग पूल पर [illegible] पर स्विमिंग पूल का [illegible] तो है [illegible] ही नहीं।

नीरा : तभी तो [illegible] का [illegible] लेती है वहाँ टूटी दीवार फाँदकर। (अब्दुल्ला से) तुमने मैन पानी का गिलास [illegible] था?

निज़ामन : तुम लोग [illegible] कहानी [illegible] बता?

नीरा : [illegible]।

निज़ामन : तो मैं [illegible] मे…

अब्दुल्ला : हाँ, कल तक यहीं न बैठे रहना है तुझे। अब जाकर लाना नहीं है उसे···इसकी गुड्डो दीदी को···स्विमिंग पूल से ?

नीरा : वह खुद ही आ जाएगी अभी। गीले कपड़े बदलने गई है वहाँ।

अब्दुल्ला : तो अब तक क्या वह गीले कपड़ों में ही···

नीरा : तुझे मतलब ? तू मुझे पानी का गिलास क्यों नहीं देता ?

अब्दुल्ला : पानी-वानी का गिलास नहीं मिल सकता इस वक्त।

नीरा : पानी का गिलास क्यों नहीं मिल सकता ?

नीरा पल-भर अब्दुल्ला को देखती रहती है, फिर नियामत की तरफ देखती है, फिर गिलास खुद ही खोजने लगती है।

पण्डित : सुना झुनझुनवाला···पुल टूट गया है ! (हल्की हँसी के साथ) तब तो मौका ही इधर बैठकर पीने का है। नहीं ?

अब्दुल्ला इस बीच ताले को ठोक-पीटकर बन्द करने की कोशिश करता है, पर वह नहीं बन्द होता, तो उसे लटकता छोड़कर काउंटर से आगे आ जाता है।

अब्दुल्ला : मौका तो है साहब, पर पीने को कुछ नहीं है। बार बन्द हो चुका है। आपको जो कुछ चाहिए, वह अब उधर चलकर ही मिल सकता है।

पण्डित : मौका इधर बैठकर पीने का है, और जो कुछ पीना हो, वह उधर चलकर ही मिल सकता है। इधर बार बन्द हो चुका है, उधर पुल टूट गया है। वाह !

अखबार समेटकर शेरवानी के बटन बन्द करता हुआ केबिन से बाहर आ जाता है।

पर अभी बार बन्द कहाँ हुआ है ? ताला तो ऐसे ही

अब्दुल्ला [illegible]

नोरा [illegible] ... बता रहा है

अब्दुल्ला [illegible] ... ?

नोरा [illegible]

अब्दुल्ला [illegible] ... का [illegible]
[illegible] ... रहा है
[illegible] ... इसकी गुड्डा
[illegible] । [illegible] गुड्डा [illegible]

नोरा गुड्डा दीठा वहा नहा है अब ।

अब्दुल्ला वहा न-ा है अब । ना वहा स वह

नोरा उधर गया है स्विमिंग पूल पर ।

नियामत (पास आकर) स्विमिंग पूल पर पर स्विमिंग पूल का गट तो मैं आजकल खोलता ही नहीं ।

नोरा तभी तो रोज दोपहर को हम नहा लेती है वहा टूटी दीवार फादकर । (अब्दुल्ला स) तुमसे मैंने पानी का गिलास मागा था ?

नियामत तुम लोग रोज दोपहर को नहाती हो वहा ?

[illegible]

अब्दुल्ला : हां, कल तक यहीं न बैठे रहना है तुझे। अब जाकर लाना नहीं है उसे...इसकी गुडडो दीदी को...स्विमिंग पूल से ?

नीरा : वह खुद ही आ जाएगी अभी। गीले कपड़े बदलने गई है वहां।

अब्दुल्ला : तो अब तक क्या वह गीले कपड़ों में ही...

नीरा : तुझे मतलब ? तू मुझे पानी का गिलास क्यों नहीं देता ?

अब्दुल्ला : पानी-वानी का गिलास नहीं मिल सकता इस वक्त।

नीरा : पानी का गिलास क्यों नहीं मिल सकता ?

> नीरा पल-भर अब्दुल्ला को देखती रहती है, फिर नियामत की तरफ देखती है, फिर गिलास खुद ही खोजने लगती है।

पण्डित : सुना झुनझुनवाला...पुल टूट गया है ! (हल्की के साथ) तब तो मौका ही इधर बैठकर पीने नहीं ?

> अब्दुल्ला इस बीच ताले को ठोक-पीट करने की कोशिश करता है, पर वह नहीं होता, तो उसे लटकता छोड़कर आगे आ जाता है। ३८९

अब्दुल्ला : मौका तो है साहब, पर पीने को कुछ नहीं है। बार बन्द हो चुका है। आपको जो कुछ चाहिए, वह अब उधर चल कर ही मिल सकता है।

पण्डित : मौका इधर बैठकर पीने का है, और जो कुछ पीना हो, वह उधर चलकर ही मिल सकता है। इधर बार बन्द हो चुका है, उधर पुल टूट गया है। वाह !

> अखबार समेटकर शेरवानी के बटन बन्द करता हुआ केबिन से बाहर आ जाता है।

पर अभी बार बन्द कहां हुआ है ? ताला तो ऐसे ही

[illegible]

[illegible]

अब्दुल्ला : [illegible] अभी [illegible] दिन [illegible]

पण्डित : किसी औलिया के बाद [illegible] हुआ है ? तीन औलिया के बाद चौथा [illegible] ?

अब्दुल्ला : (एकाएक) ठहरो

उसके स्वर की आकस्मिकता से पल-भर सब लोग स्तब्ध हो रहते हैं।

कुछ हो रहा है।

नियामत : तेरा मतलब है कि

अब्दुल्ला : तुम्हें नहीं सुन रहा ?

नियामत : (पल-भर सुनता रहता है) हाँ। लगता यही है

पण्डित : सचमुच ?

नियामत : लगता यही है।

मुनवाला : तो क्या इतनी जल्दी

अब्दुल्ला : मैं कब से कह रहा था।

रीता — [illegible] मैं [illegible] थे।

[illegible] — [illegible]

पण्डित — [illegible]

रीता — [illegible]

अब्दुल्ला — [illegible]

[illegible] है।

नियामत — वह नहीं हो सकता। [illegible] बहुत पहले [illegible] था।

रीता — हाँ वही और उसके [illegible] औरत

अब्दुल्ला — उसके [illegible] औरत

गुब्बारेवाला — [illegible] हुआ।

रीता — हाँ [illegible] औरत

पण्डित — औरत!

गुब्बारेवाला — उसके साथ?

नियामत — फिर हुआ क्या उनका?

रीता — वे दोनों थे वहाँ पुल पर जब पुल एकाएक हिलने लगा बुरी तरह हिलने लगा मैं किसी तरह पुल से लौट रही थी

गौरा — पुल हिलने लगा?

रीता — और जब पु

नीरा : पुल टूट गया ?

रीता : पूरा नहीं; पर किसी भी वक्त पूरा टूट सकता है।

नीरा : ज़रा देखें···

रीता को लिये-लिये उसी ओर जाती है, जिधर से रीता आई थी।

पण्डित : तब तो ज़रूर डर की बात है। क्यों अब्दुल्ला! कम से कम तेरे लिए तो है ही। क्योंकि किसी भी वक्त पुल पूरा टूट सकता है।

अब्दुल्ला : क्यों, सिर्फ़ मेरे लिए क्यों ?

पण्डित : क्योंकि तुझे अपने लड़के को देखने जाना है। यहां तो न कोई देखने को है, न दिखाने को। उस पार पहुंच गए, तो वहां पड़े रहेंगे। न पहुंचे, तो यहां भी कुछ बुरा नहीं है। अच्छा-खासा बार है। अगर ज़्यादा नहीं, तो दस-बीस दिन बैठकर पीने का सामान तो मिल ही जाएगा।

अब्दुल्ला : (अलमारी पर नज़र डालकर) दस-बीस दिन ? नहीं, सामान तो यहां इतना है कि···(सहसा रुककर) पर मैं भी क्या बात सोचने लगा ? दस-बीस दिन हम लोग <u>यहां थोड़े ही न पड़े रहेंगे</u>? *हां, इस बात का अफ़सोस* ज़रूर है कि इतना सामान जो हम लोगों ने अभी-अभी मंगवाया था—यह सोचकर कि सीज़न में काफ़ी बिक्री होगी—वह सब ज्यों का त्यों पड़ा रहेगा। न जाने कितने दिन। काफ़ी साहब का यह पहला साल है ठेके का, और अगर इसी साल उन्हें घाटा उठाना पड़ा, तो···तो अगले साल फिर अपने पर वही बेकारी आ जाएगी। चार साल बेकार रहने के बाद इस साल काफ़ी साहब की मेहरबानी से यह नौकरी मिली थी—अब आगे इसका भी पता नहीं कि रहेगी या नहीं।

[illegible] उनके [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible]

अब्दुल्ला मैं [illegible] का दफ्तर नहीं कर [illegible] जो कुछ आमदनी है, वह बस नौकरी की [illegible] है — और वह भी बारमैन की। ज़िन्दगी में और कोई काम [illegible] नहीं आया। पच्चीस साल से यहीं काम करता आ रहा हूँ, पर [illegible] भी इसी कमरे में बारमैन था, जब इसी तरह बाढ़ आयी थी। उस साल जो कुछ यहाँ हुआ, वह अगर आपको सुनाने लगूँ तो...

नियामत तू वह किस्सा फिर से शुरू करता है, तो मैं बाहर से ताला लगाकर जा रहा हूँ। तू यहाँ इत्मीनान से बैठकर किस्सा सुना। साथ ब्लैक एण्ड ह्वाइट की बोतल भी खोल दे।

अब्दुल्ला ब्लैक एण्ड ह्वाइट की बोतल! ठहर! पहले ही मेरा ब्लैक एण्ड ह्वाइट का हिसाब मेल नहीं खा रहा। अभी जाकर शर्मा साहब को आज का हिसाब दूँगा, तो उसकी डाँट और खानी पड़ेगी। ... ठहर, हिसाब की कापी मैंने यहीं दराज़ में डाल दी है। वह तो मुझे साथ ले जानी चाहिए।

जल्दी से जाकर दराज़ खोलता है।

यह रही कापी, और यह... (अब तक पण्डित की तरफ देखकर) अरे! आपके बिल का पेमेंट तो अभी हुआ ही

नहीं।

स्वेटर की जेब टटोलकर उसमें से निकालता है।

यह आपका बिल है—तेरह रुपये कुछ पैसे का

नियामत बिल उससे लेकर पण्डित को

नियामत : बिल तेरह रुपये कुछ पैसे का नहीं, सत्रह रुपये कुछ पैसे का है।

अब्दुल्ला : सत्रह या तेरह जितने का भी है, जल्दी से इसका पेमेंट कर दें। (कापी निकालकर उसमें काट-छाट करता हुआ) मैं भी कहूं कि हिसाब में इतना फर्क कैसे पड़ रहा है।

पण्डित : (बिल लेकर) फर्ज कर इस वक्त इतने पैसे मेरी जेब में न हों।

अब्दुल्ला : आपकी जेब में, और पैसे न हों··· यह कैसे हो सकता है?

पण्डित : जब और इतना कुछ हो सकता है, एक अच्छा-खासा पुल टूट सकता है, तो यही क्यों नहीं हो सकता?

नियामत : (चिढ़कर अब्दुल्ला से) अब खामखाह वक्त क्यों बर्बाद कर रहा है? बिल का पेमेंट बाद में नहीं हो सकता? उधर पहुंचकर नहीं हो सकता?

पण्डित : क्यों···हो सकता है न उधर पहुंचकर? तो बस अभी चल रहे हैं···एक मिनट में।

शेरवानी की सलवटें निकालता हुआ बरामदे की तरफ चल देता है।

नियामत : देखिए मिस्टर पण्डित···

पण्डित : कहा है न अभी एक मिनट में चल रहे हैं। बस अब आ ही रहे हैं जरा उधर गुसलखाने तक होकर। आओ मुनमुनवाला, तुम भी हल्के हो लो······

भी वहीं का वहीं रहता है। अभी परसों
था, उसीकी वजह से तो शफी साहब
जाने की छुट्टी नहीं दी।

इसी बीच नीरा और रीता

हैं, अपने बीच कुछ बातें करती हुईं।

ा : पर बता अब मैं इसमें क्या कर सकता हूं ? बोतलों का हिसाब ठीक रखता हूं, तो किसी न किसी बिल में गड़बड़ हो जाती है। बिलों का हिसाब ठीक रखता हूं, तो बोतलों की नाप-जोख में फर्क पड़ जाता है। (दराज से एक पोस्टकार्ड निकालकर) इन्हीं सब उलझनों में घर से आयी चिट्ठी का जवाब भी अब तक नहीं दे पाया। वे लोग वहां न जाने क्या सोच रहे होंगे! कि कैसा आदमी है—खुशखबरी पाकर मिलने आना तो दूर, चिट्ठी की पहुंच तक का पता इसने नहीं दिया गया।

ा : अब इसे घर की याद सताने लगी! तू पानी का गिलास देगा या नहीं? कब से मांग रही हूं।

ा : अब कुछ नहीं मिलेगा। गिलास भी अलमारी में बंद किए जा चुके हैं।

) तू इसमें भकभक करना बाद में, पहले मुझे

मांग दे।

. चाहिए ? उनमें तुझे

खुद यहां तशरीफ ले आएं,

[illegible] अ[illegible]मोल मोती, जो [illegible] [illegible] कभी [illegible]

[illegible]

अनसूया [illegible] मैंने अपना [illegible] नहीं दिया [illegible] [illegible] भी [illegible], [illegible] [illegible] मिल जाता है, [illegible] [illegible] या [illegible] [illegible]।

पण्डित [illegible]। [illegible] [illegible] ?

[illegible] का [illegible] जगाना-बुझाना हुआ [illegible] है।

अनसूया (अनसूया का हाथ [illegible] की तरफ [illegible] जाता है) [illegible] [illegible] पानी [illegible] की [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए हैं।

पण्डित अनसूया, अगर [illegible] [illegible] तो [illegible] भी [illegible] [illegible], हाँ।

निजामत (अनसूया से) [illegible] पानी का [illegible], नहीं तो [illegible] में यह प्यासी हो [illegible] में [illegible] [illegible] नजर आएगी। [illegible] [illegible] [illegible] की तरफ देख [illegible]… वह [illegible] [illegible]

फिर बरामदे की तरफ चल देता है। अब्दुल्ला त्योरी के साथ अलमारी खोलकर उसमें से गिलास निकालता है, और पानी भरकर उसे गुस्से से काउंटर पर रखता है।

अब्दुल्ला : यह ले पानी···

पण्डित : (अखबार से सिर उठाकर) अब्दुल्ला, सिगरेट का पैकेट।

अब्दुल्ला : ओह! सिगरेट का पैकेट!

फिर से अलमारी खोलकर उसमें से पैकेट निकाल लेता है।

यह रहा आपका पैकेट। पर इसके पैसे···

पण्डित : पैसे तुझे बिल के साथ ही वसूल हो जाएंगे। जहा सत्रह रुपये कुछ पैसे हैं, वहा साथ ढाई रुपये और जोड लेना।

अब्दुल्ला : (कुछ हड़बड़ाहट के साथ जेबें और दराज टटोलता हुआ) बिल के साथ···पर हा···देखिए बात यह है कि···वह जो बिल है न···(दूसरा बिल निकालकर देखता है, पर कुछ सोचकर उसे फिर जेब मे रख लेता है) खैर, यह बात इस वक्त नहीं, बाद मे करने की है। ये पैसे अगर आप··· खैर मैं इन्हे बिल मे ही जोड देता हू।

बिल फिर से निकालकर उसपर पेंसिल से लिखने लगता है।

पण्डित : (उठकर उसकी तरफ आता हुआ) बिल तो तेरा मेरे पास है। यह तू किसके बिल मे पैसे जोड रहा है?

अब्दुल्ला : मैंने आपसे कहा है न···यह बात मैं आपसे बाद मे करूगा। अभी, बाहर चलकर। इस वक्त पहले मैं···

मीरा इस बीच दोनों को देखती रहती है। फिर अचानक वहा से चल देती है।

देख लिया कितनी अच्छी लड़की हूं मैं ?

बायीं तरफ से चली जाती है। अब्दुल्ला मुंह में कुछ बड़बड़ाता हुआ काउंटर से आगे आने लगता है कि तभी टेलीफोन की घण्टी बज उठती है। घण्टी सुनकर झुनझुनवाला भी नींद से जैसे जागता है, और झोंक में उठकर फिर बाथरूम की ओर चला जाता है।

अब्दुल्ला : (जाकर रिसीवर उठाता हुआ) यह पांचवीं दफा शफी साहब का फोन आया है। (रिसीवर में) हलो···शफी साहब ?···क्या ?···कौन ?···मिसेज हल्दवानी ?··· यहां की मेम्बरशिप फीस ?···आज यहां की मेम्बरशिप फीस कुछ नहीं है।···मैं कौन हूं ?···मैं कोई नहीं हूं··· -जी, मैं क्लब में कुछ भी काम नहीं करता, आप कल फोन कीजिएगा। (झटके से रिसीवर रखकर) कहती है बम्बई से आयी हूं, मेम्बर बनना चाहती हूं। बस आज ही तो एक दिन है जिस दिन इसे मेम्बर बनना है।

टेलीफोन से हटकर आते हुए एकाएक जैसे कुछ सुनने के लिए रुक जाता है।

यह आवाज़ पहले से ऊंची नहीं हो गयी ?

पण्डित : कौन-सी आवाज़ ?

अब्दुल्ला : दरिया के पानी की।

पण्डित : तेरे वहम का भी कोई इलाज नहीं। अब और कुछ नहीं, तो दरिया की आवाज़ ही तुझे ऊंची सुनायी देने लगी।

अब्दुल्ला : वहम की बात नहीं है, आप ज़रा ठीक से सुनिए। मुझे लगता है कि दोनों दरियाओं में पानी बढ़ रहा है। मैं दोनों की आवाज़ें अलग-अलग सुन सकता हूं। (लान के

दाएँ पैरों की तरफ इशारा करके) यह सिकुड़न की आवाज़ है और ''(खिड़की की तरफ इशारा करके) यह आवाज़ तूफ़ान की है। मैं इन आवाज़ों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ क्योंकि ' क्योंकि 'आज का दिन है मुझे दिल का दौरा सब से पहला शुरू हुआ है।'

पण्डित मेरा तो ख्याल है कि पैदा होने के दिन से पहला शुरू हो गया होगा।

अब्दुल्ला नहीं साहब, मुझे दौरा पड़ना शुरू हुआ है तकरीबन बीस बरस पहले भी इसी तरह एक बार बाढ़ से बड़ा नुक़सान हुआ था। तब कस्बे का इलाका एक सिलसिले में डूबा था और मैं इसी तरह यहाँ चौकीदार था। बाद में कस्बे के अन्दर चार आदमी फँस रह गए थे—ठेकेदार, मैं और दो बैरे। इधर से सिन्धु का पानी बढ़ता बरामदे तक आ गया था, और उधर से शायराना के पानी ने आधी छँगरी तोड़ दी थी। हम लोगों ने रसद का सामान साथ लेकर पूरी रात तब इस हाल की छत पर काटी थी। पानी जिस तरह बढ़ रहा था उससे लगता था कि घण्टे दो घण्टे के अन्दर वह हमारे सिरों के ऊपर से होकर बहने लगेगा। उफ़! वह रात और उसके बाद आज की शाम—मुझसे तब से इस छत की तरफ आँख उठाकर देखा भी नहीं जाता। मुझे दिल का पहला दौरा उसी रात छत पर लेटे-लेटे पड़ा था।

पण्डित ख़ैर, आज तुझे दिल का दौरा नहीं पड़ेगा क्योंकि उससे पहले ही हम लोग तुझे लेकर क्लब से बाहर पहुँच जाएँगे।

अब्दुल्ला यह तो ठीक है साहब, मगर कहने की बात सिर्फ़ इतनी है कि··

नियामत घबराया हुआ बरामदे की तरफ से आता है।

नियामत (पास आकर अब्दुल्ला से) पता है अब और क्या हुआ है!

अब्दुल्ला : क्या हुआ है?

नियामत : बस कुछ पूछ नहीं।

दायीं तरफ गैलरी में दरवाजे से जाने लगता है।

अब्दुल्ला : (घबराए हुए स्वर में) आखिर कुछ बताएगा भी कि क्या हुआ है?

नियामत : (जाते-जाते) अयूब साहब सचमुच फिर पुल पार करके अन्दर चले आये हैं—अपनी बेगम को साथ लेकर! मैं तो मजाक समझ रहा था ...पुल के पार छोड़कर आया था उन्हें...

अब्दुल्ला : अपनी बेगम को साथ लेकर! उनकी बेगम इस वक्त यहां क्या करने आई हैं? सच-सच बता...

नियामत : यकीन नहीं है तो खुद जाकर देख लें ...मुझको ठीक कह रही थी...यह आ गया है। मैं उधर, उस तरफ भी देख लूं क्या हाल है। शायद दरार..... अब निकलना मुश्किल होगा।

परेशान-सा चला जाता है।

पण्डित : इसका मतलब है कि पुल से आने-जाने में कोई खास दिक्कत नहीं है।

अब्दुल्ला : हम यहां से उस पार जाएंगे या उस पार से आनेवालों के लिए यहां रहेंगे? यह भी कोई बात हुई! हम उधर जाने की तैयारी में हैं, लोग इधर आ रहे हैं!

पण्डित : लेकिन हम लोग चलेंगे तो सभी न अब के दोनों

[illegible] आपको अब्दुल साहब और उनकी बेगम [illegible] और [illegible] ऊपर की [illegible]

[illegible]

अब्दुल्ला [illegible] शोर [illegible]। सुन रहे है ?

पण्डित क्या

अब्दुल्ला [illegible] आवाज। ऐसा नहीं लगता जैसे कोई [illegible] रहा हो ?

पण्डित सुन [illegible] कुछ नहीं [illegible]। पानी की आवाज है—वैसी ही जैसी हमेशा सुनायी देती है।

अब्दुल्ला हमेशा यह आवाज ऐसी सुनाई देती है ?

पण्डित दरियाओं में पानी ज्यादा होने से कुछ ऊंची सुनाई देती होगी—बस इतना ही फर्क है।

अब्दुल्ला इतना ही फर्क है ? पर आप शायद इस फर्क को नहीं समझ सकते। अगर वह रात मेरी तरह यहां काटी होती, तो आप भी इस फर्क को समझ सकते थे। मुझे लगता है कि अब और यहां रहना खतरे से खाली नहीं है।

पण्डित तो तू चाहता क्या है ? तू अभी चल, अभी यहां से चल दे।

अब्दुल्ला चल तो दें पर वे दोनों लड़कियां ? और वो अब्दुल साहब और उनकी बेगम। इन सबको छोड़कर कैसे जाया जा सकता है ? आप थोड़ी देर यहीं ठहरें, मैं अभी सबको जमा करके लाता हूं। (चलते-चलते) पर आप तब तक यहीं ठहरेंगे। कहीं जाएंगे नहीं ''मैं अभी आ रहा हूं—बाहर सब लोग साथ-साथ चलेंगे। ठीक है न ?

पण्डित : हां, ठीक है। मैं तेरे आने तक यहीं हूं—तू फिक्र मत कर।

पीछे की तरफ देख लेता है।

अब्दुल्ला : बस, मैं अभी आ ही रहा हूं।

बायीं तरफ से चला जाता है। पण्डित अपना छोड़ा हुआ अखबार फिर से उठाकर काउंटर पर कुहनी रखे उसमें से समाचार पढ़ने लगता है :

पण्डित : आदमी अन्तरिक्ष मे···एक सौ नब्बे घण्टे पचपन मिनट। अन्तरिक्ष मे आदमी की उड़ान के चार नये रिकार्ड। · चढ़ती कीमतो को नीचे लाना असम्भव। वित्त मंत्री की नयी कर-योजना।···उत्तर प्रदेश के वैधानिक सकट के सम्बन्ध मे अभी कोई निर्णय नहीं।···दो-दो रुपये के नये नोट ···चीफ कमिश्नर का बयान—नल के पानी के कीड़े नुकसानदेह नहीं।

इस बीच पीछे लान मे अयूब की दुबली-सी आकृति नजर आती है। जमा-जमाकर पैर रखता हुआ बरामदा पार करके वह हाल मे आता है। वह चौबीस-पच्चीस साल का नवयुवक है—चेहरे की हड्डियां निकली हुई हैं। गहरे रग का सूट पहने है। टाई और कालर मुचड रहे है। हाथ मे ह्विस्की का आधा खाली गिलास है जिसमे से वह अन्दर आकर ·। घूं० भरता है। बात करते हुए ···। आवाज से नशे का असर

क्या कह रहे हो···क्या नुक-

उसकी तरफ देखता है और

आया ही नहीं। कम-से-कम मैंने उसे नहीं देखा।

अयूब : यही नियामत भी कहता था—कि वह नहीं आया। मैंने सोचा कि अब आये ही हैं, तो एक बार देख तो लेना चाहिए। पर डाक्टर तो डाक्टर, और भी कोई कहीं आसपास नजर नहीं आया। नजर आये कुछ ताश के बिखरे हुए पत्ते, कुछ मूंगफली के छिलके, कुछ चूरा हुए वेफर्ज, कुछ मसली हुई प्लास्टिक की थैलियां, और यह गिलास। इनके अलावा एक फिसले हुए पांव का निशान है, और एक सैंडल का बायां पैर। आदमी सच कितने डरपोक होते हैं! नहीं?

पण्डित : नियामत कह रहा था कि कोई और भी शायद तुम्हारे साथ पुल पार करके आया है।

अयूब : आया है? आया नहीं, आयी है। और आते-आते मे ही अभी दरिया में गिर गयी होती।

पण्डित : दरिया मे गिर गयी होती? पर कौन थी वह जो…?

अयूब : थी नहीं, है। वह मेरी बीवी है सलमा…आज मुझे यहीं उसे डाक्टर से मिलाना था।

पण्डित : पर अगर टूटा पुल पार करने में सचमुच खतरा था, तो ऐसे में उसे पार कराना…यह बहुत जरूरी था क्या?

अयूब : खतरा-अतरा कुछ नहीं था। मैं एक छलांग में उस तरफ से इस तरफ आ गया था। पर बेगम बेचारी डर रही थी, इसलिए ऐसा हुआ। कहा न, डाक्टर से उसे मिलाना था।

पण्डित : डाक्टर से मिलाना था! कुछ तबियत खराब है?

: नहीं, कुछ रिश्ते खराब हैं। मेरे और मेरी बीवी के… हमें कुछ गहरी बातें डाक्टर से करनी थीं। डाक्टर मेरी बीवी का बचपन का दोस्त है…अब समझे कुछ तुम?

कर रखा है।

पण्डित इस बीच आकर एक कुर्सी पर पसर कर बैठता है। फिर वह म देखता है कि उसने अब्दुल्ला को भी कुर्सी पर पैर फैला कर बैठा, जैसे उस नीद

पण्डित अब्दुल्ला, सिगार निकालना उसमें से मेरे लिए एक इड दे ना। बड़ा वाला।

अब्दुल्ला (थोड़ा मुस्कराकर) मैंने पण्डित, कि आपको जो चलकर ही वाला।

पण्डित अच्छा र ।

✓

आदमी फिर वापस नहीं आ सकता क्या ?

अब्दुल्ला : जी हां, वापस आने के लिए इससे अच्छा वक्त और कौन सा हो सकता था ! (आकर रिसीवर उठाने लगता है, रिसीवर उठाकर) हलो एक्सचेंज—मुझे थी टू वन चाहिए—हलो हलो हलो—थी टू वन नहीं, थी वन टू चाहिए—थी, वन, टू—क्या हुआ है ? (रिसीवर रखकर) अब यह नंबर ही नहीं मिलने का।

पण्डित : तू किसे फोन कर रहा था ?

अब्दुल्ला : काजी साहब को, और किसे करता ?

पण्डित : नंबर मिल जाय, तो जरा मुझे भी देना। मुझे भी उनसे एक बात करनी है।

अब्दुल्ला : आपको भी इसी वक्त बात करनी है ! इसके बाद भला कभी बात करने का वक्त मिलेगा ?

अयूब : मियां अब्दुल्ला, तू खफा किस बात पर हो रहा है ? वैसे जब तू खफा होता है, तो तेरे चेहरे पर अजब-सी रौनक आ जाती है। और जब वह रौनक आ जाती है, तो तू खफा नहीं जान पड़ता। खैर, काजी से पूछ लेना कि अगर डाक्टर वहां उसके पास हो, तो एक बात उसे बता दे। वह ये कि हम दोनों यहां पहुंच गये हैं, और उसका इंतजार कर रहे हैं।

अब्दुल्ला : वह टू कि

पण्डित [illegible]

अपूर्व [illegible] भी [illegible] । [illegible] भी [illegible]

पण्डित [illegible] या तुम भी [illegible]

अपूर्व ([illegible]) [illegible] और [illegible] भी [illegible] है [illegible] जानते हैं [illegible] तुम्हारी [illegible] भी नहीं [illegible]

[illegible] और [illegible] बढ़ता है। [illegible] अपना [illegible]

आदमी फिर वापस नहीं आ सकता क्या ?

अब्दुल्ला : जी हां, वापस आने के लिए इससे अच्छा वक्त और कौन सा हो सकता था ! (जाकर रिसीवर उठाने लगता है, रिसीवर उठाकर) हलो एक्सचेंज—मुझे थ्री टू वन चाहिए—हलो हलो हलो—थ्री टू वन नहीं, थ्री वन टू चाहिए—थ्री, वन, टू—रुका हुआ है ? (रिसीवर रखकर) अब यह नंबर ही नहीं मिलने का।

पण्डित : तू किसे फोन कर रहा था ?

अब्दुल्ला : शफी साहब को, और किसे करूंगा ?

पण्डित : नंबर मिल जाय, तो जरा मुझे भी देना। मुझे भी उससे एक बात करनी है।

अब्दुल्ला : आपको भी इसी वक्त बात करनी है ! इसके बाद भला कभी बात करने का वक्त मिलेगा ?

अयूब : मियां अब्दुल्ला, तू खफा किस बात पर हो रहा है ? वैसे जब तू खफा होता है, तो तेरे चेहरे पर अजब-सी रौनक आ जाती है। और जब वह रौनक आ जाती है, तो तू खफा नहीं जान पड़ता। खैर, शफी से पूछ लेना कि अगर डाक्टर उसके पास हो, तो एक बात उसे बता दे।

यहां पहुंच गये हैं, और उसका इंतजार

...बी बेगम यहां डाक्टर का इंत-
...इस तरह डाक्टर को और यहां

...का वक्त दे रखा था। और
...री है...क्योंकि बेगम नीम-
...पड़ी हैं...

...र आता हुआ) बेगम नीम-

उनकी तबियत ज्यादा खराब है ?

अयूब : उसकी तबियत उतनी खराब नहीं है जितना वह डर गयी है। डर गयी है क्योंकि उसका पांव फिसल गया था। अगर किसी तरह संभल न जाती, तो हो सकता था कि···

पण्डित : हां, तुमने बताया था कि वह दरिया में गिरते-गिरते बची है।

अयूब : अब मैं सोच सकता हूं कि वह क्यों इतना डर गयी है। वह डाक्टर को शायद फेस नहीं करना चाहती।

पण्डित : फेस नहीं करना चाहती ?

अयूब : इस बात को छोड़ो। क्या तुम सोच सकते हो कि मियां-बीवी के रिश्तों के बीच अगर कोई छाया भी आ जाए, तो क्या से क्या हो सकता है···गलत मत समझना··· मेरी बीवी की जिंदगी में और कोई नहीं है, पर मेरे लिए वह एक कब्रिस्तान बन गई है···औरत कब्रिस्तान क्यों बन जाती है ?

पण्डित : क्यों बन जाती है ! शायद उसके भीतर कुछ मर जाता है···

अयूब : लेकिन क्यों मर जाता है ?

पण्डित : इसके लिए हर आदमी की अपनी अलग वजह हो सकती है। उसकी अपनी वजह होगी।

अयूब : हां, वह तो होगी ही।···शफी बता रहा था कि कलकत्ते में तुम्हारा ऊन का कारखाना है ?

पण्डित : हां, है तो सही। पर उसका इस बात से क्या ताल्लुक है ?

अयूब : ताल्लुक यह है कि तुम सिर्फ ऊन का काम कर सकते हो। आदमी के अकेले रहने की बात नहीं समझ

[illegible] बात [illegible] बात [illegible] की [illegible]
[illegible] बात [illegible] है ?

पण्डित [illegible] औरत [illegible] तुम्हारी [illegible]
[illegible] रही थी ?

अनुब [illegible] लगा रहा था। [illegible]
[illegible] थी। [illegible]

पण्डित [illegible]
तुम [illegible] अन्तर [illegible] मिलने पड़े
थे ?

अनुब तो इसका मतलब है कि [illegible] बात [illegible]
रहा है — वह सचमुच बहुत इस्पात आदमी है।

पण्डित इस्पात ! क्या ?

अनुब सिर्फ इस्पात आदमी ही इस तरह हर बात के लिए
[illegible] तुलना रहता है। वह इस्पात न होता, तो तुम्हें
मेरे बारे में और मुझे तुम्हारे बारे में इतनी बातें न
बताता। (सिगरेट पण्डित की तरफ बढ़ाकर) तुम लोग
[illegible] ?

पण्डित नहीं, अभी नहीं।

अनुब ओ... तुम इसलिए ऐसी सिगरेट पीना पसन्द नहीं
करते। तुम मेरे घर के लड़ाई झगड़े का जिक्र क्यों कर
रहे थे ?

पण्डित : इसलिए कि तुमने खुद इसका जिक्र मुझसे किया था...तुम
अपनी बीवी की बात मुझसे कर रहे थे। नहीं ?

अनुब मैं अपनी बीवी की बात तुमसे कर रहा था...कौन-सी
बात ?

पण्डित : वही—औरत के बर्फिस्तान बन जाने की बात...अगर

यह भी कह रहा था कि उसे डर है कि कहीं ···

अयूब : कि कहीं मेरी बीवी खुदकशी न कर बैठे ? (हंसकर) यह बात उसने एक बार होले से मुझसे कही थी। तब मुझे लगा था कि यह वह इसलिए कह रहा है कि शायद मेरी बीवी को मुझसे पिण्ड छुड़ाने का यही एक रास्ता नजर आता है। लेकिन शफी मेरा दोस्त है, और भला आदमी भी है। इसलिए उसने बहुत होले से यह बात मुझसे कही थी···मेरे साथ दोस्ती निभाने के साथ-साथ वह अपनी भलमनसाहत को भी खतरे में नहीं डालना चाहता। (एक घूंट में गिलास खाली करके) और वह जानता है कि मैं भला आदमी नहीं हूं।

गिलास को काउंटर पर लुढ़का देता है जिससे वह काउंटर के अन्दर की तरफ गिरकर टूट जाता है।

पर तुम जो बात कह रहे थे, मैं उसीको लेकर पूछता हूं—यह नहीं हो सकता कि आदमी शिद्दत से सोचने का आदी हो, इसीलिए उसका घर में लड़ाई-झगड़ा हो? इसीलिए वह सामने के गड्ढे को न देख सके, और उसकी गाड़ी एक पत्थर से जा टकराए?

पण्डित : और उसका हाथ एक गिलास को भी ठीक से न रख सके, जिससे वह दूसरी तरफ गिरकर टूट जाए।

अयूब : मैं गिलास की कीमत अदा कर सकता हूं, उसकी तुम फिक्र मत करो।

पल भर खामोश रहकर कश खींचता रहता है। फिर लाउंज में तिपाई की तरफ जाकर उसपर रखी ऐश-ट्रे में अपना सिगरेट बुझा देता है।

टुकड़े उधर कैसे बिखर गए ?

पण्डित : कैसे भी बिखर गए—तू पाव संभालकर रखना। पहने भी तू यह घिसी चप्पल है जिसमें जाने कितने सूराख हैं।

अब्दुल्ला पैर संभालता हुआ काउंटर के पीछे जाकर जल्दी से अलमारी खोलता है, और उसमें से ब्रांडी की बोतल और एक गिलास निकालता है।

अब्दुल्ला : कहा नहीं था मैंने आपसे कि पानी की आवाज तेज होती जा रही है ? पर आपका ख्याल था कि यह मेरा वहम है—मेरे कान अपने अन्दर से ही ऐसी आवाज सुन रहे हैं। अब चलकर देख लीजिए न कि दोनों दरिया आपस में मिल रहे हैं या नहीं—यह आवाज रोज इस तरह सुनायी देती है ?

गिलास में थोड़ी-सी ब्रांडी डालता है। फिर उसमें से थोड़ी वापस बोतल में डालता है।

पण्डित : यह ब्रांडी किसके लिए ले जा रहा है ?

अब्दुल्ला : अयूद साहब की बेगम के लिए।

पण्डित : उनकी तबियत सचमुच ज्यादा खराब है क्या ?

अब्दुल्ला : (गिलास लिए काउंटर से आगे आता हुआ) इसका मुझे पता नहीं। यह बात या अल्लाह मियां जानता है, या नियामत मियां। एक तरफ मुझसे कह रहा है कि जल्दी से उनके लिए ब्रांडी ले आ और दूसरी तरफ कह रहा है कि···

सिर हिलाकर चुप कर जाता है।

पण्डित : क्यों, चुप क्यों कर गया ?

अब्दुल्ला : क्योंकि दूसरी तरफ के बाद एक तीसरी तरफ

यह वाड़ी मैंने तुम्हारे लिए डाली है।

पण्डित कुछ कहने को होता है, पर जैसे अपनी बात दबाकर बाहर निकल जाता है। मयूर स्टूल से उठकर लाउज के बीचोबीच आ जाता है।

टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठती है। वह गिलास से एक घूट भरकर उसे तिपाई पर रख देता है, और जाकर रिसीवर उठा लेता है।

मयूर : (रिसीवर में) हलो···हां-हां···हूं, यहीं पर हूं,···खतरा? खतरा कोई नहीं है···कौन? डाक्टर?···वह वहीं है?··· तुम्हारे पास?··· हां-हां, आयी है···वह भी यहीं है···क्या?··· वह आना चाहता था?···तो उसने कहो न, अब भी आ जाय···आसार अच्छे नहीं हैं···नहीं हैं, तो क्या हुआ? वह आना चाहे तो···क्या? किसका ख्याल?···अपना?··· दूसरो का? दूसरा इस वक्त यहां कोई नहीं है···

सहसा उसकी नजर बरामदे से आती हुई गुड्डो पर पड़ती है। गुड्डो के चेहरे और हाव-भाव में वह ताजगी है जो तैरने के बाद शरीर में आ जाती है। उसके कपड़े बिलकुल नयी तरह के हैं, पर भीगने से उनकी क्रीज मर चुकी है। बाल कटे हुए हैं, पर चेहरे पर सिवाय हल्की लिपिस्टिक के कोई भी मेक-अप नहीं है। वह अपना पर्स हिलाती हुई हाल में आकर कुछ परेशानी के साथ इधर-उधर देखती है।

रीता : क्या बात है ?

अपूर्व : तुम्हें शायद···मुझसे डर लग रहा है। मैं कहना चाहता था कि अच्छा होगा···अगर···तुम···

रीता : अगर मैं···

अपूर्व : अगर तुम···कल को···आज के साथ मिलाकर न देखो··· हो सकता है कल की वजह से···

रीता : कल का जवाब तुम्हें कल ही नहीं मिल गया था ?

अपूर्व : वही तो मैं भी कह रहा हूं···कि कल की बात···कल के साथ थी। और जहां तक आज का सवाल है···आज के लिए···मुझे तुमसे इतना ही कहना है कि···

रीता : आज के लिए मुझसे कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। अगर कोशिश करोगे कहने की, तो मैं अभी बाहर चल दूंगी···

अपूर्व : यह तो खैर मुमकिन ही नहीं है···मतलब बाहर चल सकना।···क्योंकि अभी-अभी अब्दुल्ला कह गया था कि फिलहाल किसीको भी उधर न आने दिया जाए।

रीता : (रुककर) क्यों ? अब्दुल्ला कौन है हमें रोकने वाला ?
कौन हो मुझसे यह कहने वाले ?
कोई भी आदमी कौन है, यह क्या यह कभी
सोचा है ?

अपूर्व : यही कि एस० पी० एम० का कहना है कि अब किसीको भी पुल पर आने-जाने न दिया जाय। इसलिए हो सकता है कि जितने लोग यहां हैं, उन सबको आज रात-भर यहीं रहना पड़े।

रीता : (कुछ घबराहट के साथ) रात-भर यहीं रहना पड़े ? यह कैसे होगा ?

अपूर्व : कैसे भी हो…अगर रहना पड़ेगा…तो रहना ही पड़ेगा।…अधिक हो तो यह भी सकता है कि…हम लोग…आज रात के बाद कल दिन भर…और कल दिन भर के बाद फिर कल रात भर…यहीं रुके रहें…और पुल ठीक होने में न आए।

रीता : ये सब फिजूल की बातें हैं। हम लोग सालों से यहां आते हैं। ऐसा कभी आज तक नहीं हुआ।

अपूर्व : इसलिए तो और भी मुमकिन है…कि आज ऐसा हो जाय।…जो कभी नहीं हुआ होता…वह होने लगता है, तो…(मुस्की बनाकर) बस ऐसे हो जाता है।…बहरहाल…तुम उस लड़की को खोज रही थी न…

रीता : (अपने को थोड़ा सहेजकर) हां…वह जरा-सी बात से मुझसे नाराज होकर जाने किधर निकल गयी है।

अपूर्व : लड़कियां…बहुत जल्दी नाराज हो जाती हैं।…खास तौर से…छोटी उम्र की लड़कियां। नहीं ?

रीता : (कुछ सकपकाकर) वह इसी बात पर तो मुझसे नाराज हुई है…कि उसे छोटी उम्र की क्यों समझा जाता है। इतना कह दिया कि यह बात भी जो वह पूछ रही है, क्या बच्चों की-सी नहीं है ? और यह कि अभी चौदह की तो वह हुई नहीं, फिर अभी से अपने को बड़ी समझने का शौक उसे क्यों चर्रा आया है ? बस इसी बात

[illegible]

[illegible] ... नहीं आएगा। [illegible] नज़र नहीं आता [illegible] ज़ाहिर है [illegible] का [illegible] नहीं —मगर अपना [illegible] रहा हूँ। क्योंकि निक [illegible] ही [illegible] है—अपना [illegible] ज़ाहिर लगता है किसी तरह नभाया जा सकता है—कुछ और दूर तक, फिर कुछ और दूर तक। (ब्रांडी का एक और घूंट भरके हल्की-सी हँसी के साथ) और कल का वह हादसा! क्या समझा होगा इन लोगों ने कि कितना ज़लील हूँ मैं! राह चलते एक नाबालिग लड़की का हाथ पकड़कर अपनी तरफ़ खींचना—इससे बड़ी हिमाकत क्या हो सकती थी?

: क्या सचमुच वह हादसा शराब के [illegible] हु[illegible]

था जैसा कि ये लोग समझते हैं ? क्या मैंने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया था जिससे कि दस आदमियों के बीच मुझे जलील होना पड़े ? जिससे कि इसकी खबर श्रीनगर पहुँचे और वे लोग जान जाएं कि वह खोल, वह भरम, जिसे वे बनाये रखना चाहते हैं, मैंने तोड़ दिया है ?

तभी टैरेस की ओर से आकर नीरा झाकती है।

गुड्डो दीदी ! गुड्डो दीदी !···यहां भी नहीं हैं ? उफ्···

यह वही लड़की है जिसे गुड्डो खोज रही थी और यह गुड्डो को खोज रही है···(बरामदे की तरफ जाता हुआ) ओ लड़की···क्या नाम है तेरा···सुन, इधर आ।

नीरा एक बार घूमकर उसकी तरफ देखती है, और फिर टैरेस से उतरकर बायीं तरफ भाग जाती है।

ओ लड़की···किधर जा रही है तू ? तुझसे कहा है इधर आ। सुन नहीं रही तू ? ओ···क्या नाम है तेरा··· सुन···

लान में से होकर वह भी बायीं तरफ से चला जाता है। कुछ क्षण मंच खाली रहता है। बादल की गरज के साथ हल्की वर्षा का शब्द सुनायी देने लगता है। बरामदे के पार अंधेरा गहरा होता जाता है। सहसा टेली-फोन की घण्टी बजने लगती है। कुछ क्षण बजने के बाद घण्टी बन्द हो जाती है। हवा के झोंके से तिपाई पर रखी पत्र-पत्रिकाएं फड़फड़ाती हैं। रीता दायीं तरफ से आती है।

अनुवर्तन दो

मंच में कोई परिवर्तन नहीं है, सिवाय इसके कि बिजली की बत्तियां गुल होने से चार-छः जगह बड़ी-बड़ी मोमबत्तियां जला दी गई हैं। अंगीठी में लकड़ियां सुलग रही हैं: उनकी आंच से भी हल्की रोशनी है। घुट टूट चुका है। तेज बारिश हो रही है। पर्दा उठता है तो अनूप और उसकी पत्नी सलमा ही नज़र आते हैं। पण्डित और मीरा कहीं बाहर हैं। अब्दुल्ला और नियामत भी बाहर हैं। तेज बहुत पानी और चलती तेज हवा का स्वर। अनूप और सलमा फायर प्लेस के पास गुमसुम बैठे हैं। पीछे से अब्दुल्ला और नियामत की आवाजें आ रही हैं।

नियामत हो! इधर पानी आ गया है···

... अब टूट रहा है हां···शमन के ऊपर निकल

...म यहां बिल्कुल अकेले हैं···क्यों ?

...ती है तो सब अकेले ही होते हैं···

... अलग-अलग हो सकती है। तुम्हारा नहीं है।

अपूर्व : (चीखकर) तुम्हें मालूम होना चाहिए···

सरमा : (कमरे में पण्डित और झुनझुनवाला को देखकर लौट आती है) तुम धीमे नहीं बोल सकते। यहां वो लोग भी हैं।

लोग···लोग···लोग। मैं तुमसे बात कर रहा हूं···लोगों से नहीं।

लेकिन और लोग भी सुन रहे हैं···

सुन भी लें तो क्या होगा? पुल टूट चुका है···बाढ़ का पानी बढ़ता जा रहा है···यह जगह कभी भी डूब सकती है और हम सब मौत के मुंह में किसी भी पल समा सकते हैं···उसके बाद कौन-सी बात कोई कहीं लेकर जा सकेगा···सब बातें होकर भी यहीं खत्म हो जाएंगी···

पण्डित और झुनझुनवाला आते हैं। पण्डित के हाथ में ताश की गड्डी है। झुनझुनवाला हिसाब का कागज देख रहा है। एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आती है।

: (सलमा से) आप हमें देखकर डर गई थीं?

पुल टूटने के वक्त आप वहीं पर थे?

···खुशकिस्मती से हम बच गए।

···के। ···फेंकता है) जो वक्त बचा आए···(बैठ जाता है)

··· ···, राहगीरों ···ी आवाज, कुत्ते के भौंकने ···ी की भयानक खामोशी।

··· होकर) आप लोग ताश

झुनझुनवाला नहीं [illegible] कुछ नहीं बोल रहे हैं।

[illegible] की झुनझुनी।

पण्डित [illegible]

मधुप नहीं [illegible]

पण्डित [illegible]

सरला [illegible] आदमी का [illegible] और [illegible] चाहिए।

झुनझुनवाला [illegible] क्यों [illegible] है [illegible] बुरी है [illegible] है

सरला [illegible]

मधुप [illegible]

पण्डित [illegible] झुनझुनवाला [illegible]।

झुनझुनवाला क्या [illegible]

पण्डित [illegible] है।

[illegible] है। तभी [illegible] और शीला आती है। [illegible] बहस करती चली आ रही है।

नीरा मैं कहती हूँ [illegible] वह पुरुष था।

शीला आदमी था।

नीरा पुरुष था। आदमी था तो उसकी [illegible] का रंग आदमियों जैसा क्यों नहीं था?

शीला आदमी था। पुरुष था तो उसके हाथ-पैर आदमियों जैसे क्यों थे?

मधुप आदमी और [illegible]! [illegible] क्या है? आदमी और

रीना : आदमी और जानवर में क्या फर्क होता है ?

लमा : आदमी के लिए जानवर और औरत में फर्क क्या होता है ?

अब्दुल्ला और नियामत भागते हुए आते हैं। दूसरी ओर से पण्डित और झुनझुनवाला आते हैं।

दुल्ला : (घबराया हुआ) अब कोई रास्ता नहीं है। या खुदा।

ण्डित : क्या कहा···

यामत : पानी चारों तरफ से घेरकर बढ़ रहा है···

वाला : इधर पीछे से कोई रास्ता···

यामत : कहाँ का ?

ण्डित : जहन्नुम का। ये जिन्दगी से भागने और जिन्दगी में घुमने के लिए हमेशा पीछे का रास्ता ही खोजता रहा है ··

वाला : बकवास मत करो······

दुल्ला : (टेलीफोन बार-बार मिलाता है और रख देता है) हिश् ···(फिर मिलाता है। सब चुप हो जाते हैं, फिर रख देता है) या खुदा ! मैं क्या कर सकता हूँ, जो होना होगा, होगा। (फिर टेलीफोन का नम्बर मिलाकर हताश भाव से बोलता है) या खुदा···

यामत : खुदा को टेलीफोन कर रहा है।

ब्दुल्ला : या खुदा ! (टेलीफोन का रिसीवर उसके हाथ से झूल जाता है)।

पण्डित : खुदा से बात करनी है तो झुनझुनवाला को करने दे··· ये खुदा के यहाँ भी पीछे के दरवाजे से घुसने की तैयारी बहुत दिनों से कर रहा है।

अब्दुल्ला : हिश्···

तभी इमारत टूटने की भयानक आवाज़ ·· और गिरते हुए लोगों के चीखने की आवाज़। गेरे

अयूब : हम कितने लोग हैं ?

अब्दुल्ला : एक दो तीन चार···पाँच···

नियामत : और बाकी लोग कहाँ हैं ? बेगम और दो लड़कियाँ···

सुनवाला : उन्हें छोड़ो।

वर्गिस : श् श्·· श् श् ··हलो। उधर से किसीने उठाया है रिसी-
वर···हलो···(सब टेलीफोन को घेर लेते हैं। सब टेली-
फोन के रिसीवर मे चीखते हैं—हलो···हलो···हलो।)

अनिकन : (रिसीवर लेकर) हल्लो। हूँ···टेलीफोन बंद हो गया है।

सुनवाला डेड ! (हाथ में लेकर सुनता है और कमानी पर पटक
देता है।)

अब्दुल्ला या खुदा ! अब क्या होगा !

नियामत खुदा छुट्टी देगा। (रिसीवर उठाकर अब्दुल्ला की ओर
बढ़ाते हुए) ले, खुदा को फोन कर !

पानी की तेज़ आवाज़, एसेम्बली के एक और
हिस्से के टूटने की आवाज़, सब सहमे खड़े रह
जाते हैं।

अब्दुल्ला मौत बहुत नज़दीक है। अब···(हिसाब की कापी खोजता
है) कापी कहाँ है ?

कापी उठाता है।

नियामत हिसाब देकर मरेगा ?

अब्दुल्ला (घबराकर) क्या पता पानी कहाँ तक आ गया है !

सुनसुनवाला : लगता है, यहाँ तक बढ़ आया है। (इशारा करता है।)

वर्गिस : आओ, चलकर देख तो लें, हमें कितने पानी में मरना
है। आओ···

सुनसुनवाला पीछे चलता है।

अयूब : देखें कहाँ तक आ गया है, आओ···

अब्दुल्ला और नियामत भी पीछे जाते हैं।